D.P.I (H) Ist Paper

डा० पूनम कुमारी
'राजनीति शास्त्र विभाग'
सर्व नाथ सिंह राम कु० सिंह
महाविद्यालय सहरसा

Definition and scope of Pol.Sc.

(राजनीति शास्त्र की परिभाषा एवं क्षेत्र)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलू है। इन विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने वाले इन विषयों को सामाजिक शास्त्र कहा जाता है।

राजनीति विज्ञान एक विशुद्ध सामाजिक शास्त्र है। प्रसिद्ध विद्वान अरस्तु ने कहा है कि "समाज द्वारा सुसंस्कृत मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठतम होता है। परन्तु जब वह बिना कानून तथा न्याय के जीवन व्यतीत करता है, तो वह निकृष्टतम हो जाता है। यदि कोई मनुष्य ऐसा है, जो समाज में न रह सकता हो अथवा जिसे समाज की आवश्यकता ही न हो, क्योंकि वह अपने आप में पूर्ण है, तो उसे मानव समाज का सदस्य मत समझो, वह जंगली जानवर या देवता ही हो सकता है।"

अरस्तु अपने उपर्युक्त कथन में एक सामान्य सत्य का ही प्रतिपादन करता है।

परिभाषा – राजनीति विज्ञान के विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं को मुख्यतः तीन वर्गों में रखा जा सकता है:–

(I) राजनीति शास्त्र के राज्य के अध्ययन के रूप में,
(II) राजनीति शास्त्र केवल सरकार के अध्ययन के रूप में, तथा
(III) राजनीति शास्त्र राज्य और सरकार दोनों के रूप में:–

(I) राज्य के अध्ययन के रूप में:– कुछ विद्वान राजनीतिशास्त्र को केवल राज्य का अध्ययन मानते हैं। सरकार इसके अध्ययन क्षेत्र से बाहर है।

ब्लुंटशली के अनुसार, "Political science is concerned with the foundation of the state, its essential nature, forms or manifestation and its development."

गार्नर ने तो यहाँ तक कहा है कि "Political science begins and ends with the state"

(ii) सरकार के अध्ययन के रूप में :- कुछ विचारक राजनीति शास्त्र को केवल सरकार के अध्ययन तक सीमित मानते हैं, राज्य की ओर कोई संकेत नहीं करते हैं। लीकॉक ने कहा है "Political science deals with government."

(iii) राज्य और सरकार दोनों के रूप में :- उपर्युक्त परिभाषाएं एकांगी हैं, जहाँ तक राजनीति विज्ञान का संबन्ध है, इसमें राज्य और सरकार दोनों का ही अध्ययन किया जाता है। फ्रांसीसी विचारक पॉल जेनेट के अनुसार - " Political science is that Part of social science which treats of the foundation of the state and the Principles of government."

गिलक्राइस्ट ने कुछ अधिक स्पष्ट परिभाषा दी है. उनके अनुसार, Political science deals with the general problems of the state and government."

परन्तु यह परिभाषा भी पूर्ण नहीं है क्योंकि इसमें मानवीय पक्ष की अवहेलना की गयी है। अतः राजनीति विज्ञान की न्यायसंगत परिभाषा निम्न है। "राजनीति विज्ञान समाज विज्ञान का वह अंग है जिसके अन्तर्गत मानवीय जीवन के राजनीतिक पक्ष का तथा जीवन के इस पक्ष से सम्बन्धित राज्य, सरकार तथा अन्य सम्बन्धित संगठनों का अध्ययन किया जाता है।"

क्षेत्र — राजनीतिक विज्ञान की परिभाषा की भाँति ही इस विषय के क्षेत्र के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत है।

सन 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघीय शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन [UNESCO] के तत्वाधान में समस्त विश्व के राजनीति विज्ञान के विद्वानों का एक सम्मेलन हुआ था जिसमे राजनीति विज्ञान के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये गये है, उनके आधार पर कहा जा सकता है कि राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत प्रमुख रूप से निम्न बाते आती है :—

① मानव का राजनीतिक जीवन :- मनुष्य एक ~~सामाजिक~~ राजनीतिक प्राणी है। नागरिकों से ही राज्य का निर्माण होता है और नागरिकों के लिए ही राज्य जीवित रहता है। अतः राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति के अधिकार, राज्य के प्रति उसके कर्तव्य और व्यक्ति ~~और~~ एव राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों का संचालन करनेवाले आधारभूत सिद्धान्तों और तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।

② राज्य का अध्ययन — व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वोच्च विकास और समाज के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राज्य सर्वोच्च इकाई है। अरस्तु के अनुसार "राज्य की उत्पत्ति जीवन के लिए हुई और सद्‌जीवन के लिए उसका अस्तित्व बना हुआ है।"

गार्नर के अनुसार राजनीति शास्त्र के विषय क्षेत्र में हम राज्य का अध्ययन निम्नलिखित ढंग से करते है :—

① राज्य ~~का~~ के अतीत का अध्ययन :- राज्य के वर्तमान स्वरूप का ज्ञान उसके भूतकाल के अध्ययन के आधार पर ही किया जा सकता है। इसका स्वरूप एक लम्बे

इतिहास का परिणाम है। प्रारम्भ में राज्य परिवारों का समूह मात्र था, जो आगे चल कर कुलों और जनपदों में विकसित हुआ। राज्य के इन बदलते हुए स्वरूप के साथ ही मनुष्य के राज्य विषयक विचारों में भी परिवर्तन हो रहा है। राजनीति विज्ञान इस बात की भी विवेचना करता है कि राजनीतिक विचारों का विकास कैसे हुआ और इस विकास ने राज्य के स्वरूप को किस प्रकार प्रभावित किया।

(II) राज्य के वर्तमान का अध्ययन :- राजनीति विज्ञान वर्तमान समय में राज्य के स्वरूप, प्रयोजन, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र पर विचार करता है। आज राज्य के कार्यक्षेत्र के दो रूप हैं — आन्तरिक और बाह्य। समाज में शान्ति और सुव्यवस्था की स्थापना, देशवासियों की चतुर्मुखी उन्नति, राष्ट्रीय प्रशासन और स्थानीय स्वशासन का कार्य संचालन राज्य के आन्तरिक कार्यक्षेत्र में आते हैं और राज्य के बाह्य कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध, कूटनीति, सन्धि-विग्रह तथा विश्वशांति से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

(III) राज्य के भविष्य का अध्ययन :- राजनीति शास्त्र राज्य के अतीत और वर्तमान स्वरूप का ही केवल अध्ययन नहीं करता है, अपितु वह इस बात पर भी विचार करता है कि एक आदर्श राज्य के क्या कर्तव्य होंगे। प्लेटो, अरस्तु आदि विद्वानों ने आदर्श राज्य की कल्पना की है। सामान्य धारणा भविष्य में राज्य का रूप लोकतन्त्रात्मक, ~~लोकतान्त्रिक~~ लोककल्याणकारी और विश्वबन्धुत्व की होगी।

(3) सरकार का अध्ययन :- राज्य अपनी सम्प्रभुता का प्रयोग सरकार के ~~अध्ययन~~ माध्यम से ही करता है इसलिए सरकार के बिना राज्य के किसी भी अध्ययन को पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। राजनीति शास्त्र सरकार के अन्तर्गत उसके विभिन्न अंगो, उसके

संगठन, कार्यों तथा पारस्परिक सम्बन्ध, राजनीतिक दल, जनमत, स्थानीय शासन आदि पर विचार करता है।

(4) स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ~~क्षेत्र की समस्या~~ समस्याओं का अध्ययन:-

स्थानीय संस्थाओं की कार्यप्रणाली का अध्ययन और इनमें नागरिकों का सहयोग जैसे विषय राजनीति विज्ञान के महत्वपूर्ण अंग है। स्थानीय समस्याओं का अध्ययन राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में ही किया जा सकता है। साथ ही राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है अतः इनका अध्ययन भी राजनीति शास्त्र के अन्तर्गत होता है।

(5) राजनीतिक विचारों का अध्ययन :- राजनीति विज्ञान में सुकरात और प्लेटो से लेकर बट्रेण्ड रसल तथा मनु से लेकर महात्मा गाँधी तक विभिन्न विद्वानों के विचारों का अध्ययन किया जाता है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय विधि सम्बन्धों और संगठनों का अध्ययन:- राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, के संगठन तथा कार्यों और अन्तर्राष्ट्रीय कानून का अध्ययन होता है।

निष्कर्ष — इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राजनीति विज्ञान का क्षेत्र अत्याधिक विस्तृत है और इसके अन्तर्गत राज्य राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त, सम्प्रभुता, कानून, स्वतन्त्रता अधिकार, शासन के प्रकार और अंगों, प्रतिनिधित्व, राज्य के कार्यों, राजनीतिक दलों, दबाव समूहों, जनमत व्यक्तिवाद, समाजवाद, साम्यवाद, आदि राजनीतिक विचारधाराओं तथा अन्तर्राष्ट्रीय विधि, सम्बन्धों और संगठनों का अध्ययन किया जाता है। वर्तमान समय में राजनीति शास्त्र का क्षेत्र और भी विस्तृत हो गया है।

— o —